International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 990-993

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 990-993
www.allresearchjournal.com
Received: 09-01-2016
Accepted: 04-02-2016

डॉ0 शशिकिरण सिंह
हिन्दी विभागाध्यक्ष व प्राचार्या, एन0 ए0 के0 पी0 पी0 जी0 कालेज, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 शशिकिरण सिंह
हिन्दी विभागाध्यक्ष व प्राचार्या, एन0 ए0 के0 पी0 पी0 जी0 कालेज, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

रानी नागफनी की कहानीः हरिशंकर परसाई

डॉ0 शशिकिरण सिंह

प्रस्तावना

हरिशंकर परसाई का एक मात्र उपन्यास 'रानी नागफनी की कहानी' है। इस उपन्यास को लिखने की प्रेरणा उन्हें इंशा अल्ला खॉ की रानी केतकी की कहानी को पढ़कर मिली। रानी नागफली की कहानी एक फैन्टेसी उपन्यास है जिसका उद्देश्य समाज की विभिन्न विसंगतियों का उद्घाटन करना है। परसाई ने अपने इस उपन्यास के विषय में लिखा है– '' सात–आठ साल पहले मुंशी इंशा अल्ला की 'रानी केतकी की कहानी' पढ़ते हुए मेरे मन में भी 'फेन्टेसी' जन्मी थी। वह मन में पड़ी रही और उसमें परिवर्तन भी होते रहे। अब वह 'रानी नागफनी की कहानी' के रूप में लिखी गई।

यह एक व्यंग्य कथा है। 'फेन्टेसी' के माध्यम से मैंने आज की वास्तविकता के कुछ पहलुओं की आलोचना की है। 'फेन्टेसी' का माध्यम कुछ सुविधाओं के कारण चुना है। लोक–कल्पना के दीर्घ कालीन सम्पर्क और लोक–मानस से परम्परागत संगति के कारण 'फेन्टेसी' की व्यंजना प्रभावकारी होती है। इसमें स्वतंत्रता भी काफी होती है और कार्य–कारण सम्बन्ध का शिकंजा ढील होता है। यो इसकी सीमाएँ भी बहुत हैं।''

'रानी नागफनी की कहानी' का प्रकाशन काल 1961 ई0 है। स्वातंत्रयोत्तर व्यंग्य उपन्यासों के विकास की यह एक महत्तवपूर्ण घटना है। परसाई का एक मात्र व्यंग्य उपन्यास होने के कारण तो इसका

महत्त्व है ही, समाज शिक्षा, राजनीति आदि प्रायः सभी क्षेत्रों के छल–छद्म का उद्घाटन होने के कारण भी इसका साहित्य–जगत में अन्यतम स्थान है।

'रानी नागफनी की कहानी' फैन्टेसी होने इसमें कल्पना की प्रचुरता है। लेखक का गहरा सामाजिक बोध कल्पना के सहारे वर्तमान समाज का चित्र प्रस्तुत करने में सहायक हुआ है। ऊपर से इस उपन्यास में सामन्ती जीवन की कहानी दिखाई देती है, लेकिन इस कथा के माध्यम से आधुनिक समाज की विभिन्न दुर्बलताओं क वर्णन अप्रत्यक्ष रूप में हुआ है। कुंवर अस्तभान लुप्त होती हुई सामन्ती प्रवृत्तियों का प्रतीक है। उसका मित्र मुफतलाल अपने नाम के अनुरूप मुफ्तखोर और चापलूस है। बी0ए0 में तीन बार होकर जब कुंवर अस्तभान आत्महत्या करने का प्रयास करता है तो मुफतलाल उसे समझाते हुए कहता है– ''आप ऊॅचे खानदान के आदमी हैं। आप के कुल में विद्या की परम्परा नहीं है। आपके पूज्य पिता जी बारह–खड़ी से मुश्किल से आगे बढ़े और आपके प्रातः स्मरणीय पितामह तो अंगूठा लगाते थे। ऐसे कुल में जन्म लेकर आप बी0ए0 तक पढ़े यह कम महत्त्व की बात नहीं है। इसी बात पर आपका सार्वजनिक अभिनन्दन होना चाहिए।''

राजकुमारी नागफनी का प्रेम फिल्मों की भॉति नाटकीय है। वह अनेक प्रेम–प्रसंगों में असफल होकर आंसू बहाती है तो उसकी सखी उसे समझाती है कि इस तरह दुःखी होना उसे शोभा नहीं देता। दासियां अगल–बगल पाउडर का डब्बा लेकर खड़ी हैं और जैसे ही सखी करेला मुखी की गोद में सर रख कर रोती राजकुमारी नागफनी की ऑखों से ऑसू निकलते हैं वे उन्हें पोंछकर पाउडर लगा देती हैं।

करेला मुखी नागफनी को समझाते हुए कहती हैं––––''.....आप भी पांचवे प्रेम में विफल होने से प्राण त्यागने लगीं । आप जैसी महान नारी को तो हजार प्रेम टूटने पर भी ग्लानि का अनुभव नहीं होना चाहिए।''

उसका यह कथन आधुनिक जीवन में प्रेम के कृत्रिम स्वरूप को उद्घाटित करता है।

नागफनी और कुंअर अस्तभान तथा उनके सामन्ती परिवेश का सहारा लेकर लेखक ने शासन, समाज, नौकरशाही,धर्म, शिक्षा, राजनीति सबकी सडांध को उजागर किया है। पात्रों के नामों की प्रतीकात्मकता में भी परसाई ने अपने कौशल का परिचय दिया है,तथा इससे उन्हें अपने उद्देश्य की पूर्ति में अधिक सहायता मिली है। रानी नागफनी की कहानी के कथानक में कल्पना का आधिक्य होने के बाद भी वर्तमान समाज की विसंगतियों का लेखक ने ब्याज रूप में इतना प्रभावशाली चित्रण इसमें किया है कि देखते ही बनता है।

मूल कथा राजकुमारी नागफनी और अस्तभान के प्रेम को केन्द्र में रखकर चलती है। राजकुमारी नागफनी अपने प्रेमी कुंअर अस्तभान से विवाह की इच्छुक है, किन्तु कुंवर का पिता अपने पुत्र के विवाह में भारी दहेज की मांग करता है। उसका विचार है कि पुत्र–जन्म गृह उद्योग है जिसमें लगाये गये धन पर कई गुना लाभ मिलने की आकांक्षा रखी जाती है। वह अस्तभान पर खर्च किये गये धन को उसके विवाह में वधू पक्ष की ओर से ब्याज सहित प्राप्त करना चाहता है। वह नागफनी के पिता से पचीस लाख रूपये दहेज के रूप में मांगता है। जब अस्तभान का मित्र मुफतलाल बताता है कि यह तो प्रेम–विवाह है जिसमें दहेज नहीं लिया जाता है तो वह भृकुटि चढ़ाकर कहता है–––'' क्या कहा? प्रेम विवाह ,मै सब समझता हूँ प्रेम– विवाह की चालाकी। जब किसी बाप को बिना पैसे दिये लड़की की शादी करनी होती है तब वह प्रेम–विवाह करा देता है। मेरे सामने चालाकी नहीं चलेगी। अस्तभान का अब तक का सारा खर्च देना होगा। आखिर मैंने लड़का इसलिए पैदा किया है और पाला है कि उनकी लड़की को पति कैसे मिलता? तू समझता नहीं है कि लड़के पैदा करना व्यवसाय है। यह गृह–उद्योग है। अभी तक मैने इसमें पूँजी लगाई है अब माल बाजार में आ गया है, तो मैं किसी नौकरानी से भी कुंवर की शादी कर दूँगा।'' उधर अस्तभान का दहेज–लोभी पिता उसके विवाह के लिए टेण्डर आमंत्रित करता है––''एक 24 वर्षीय,स्वस्थ तरूण को विवाह के बाजार में वर के रूप में बेचना है। तरूण बी0ए0 तक पढ़ा है और सुन्दर है। लड़कियों के पिता निम्न पते पर सील बन्द लिफाफे में लिखकर भेजें कि वे कितने रूपये देंगे। टेण्डर मंजूर होने पर एक चौथाई रकम तुरन्त जमा करनी होगी और शेष तीन चौथाई पाणिग्रहण के समय देनी होगी। कन्याओं के पिता लड़की का फोटो या उसके रूप–गुण का विवरण न भेंजे क्यों कि सौदा रकम से तय होगा, रूप–गुण से नहीं। '' राजा होने के कारण धन–सम्पत्ति का उसके पास कोई अभाव नहीं है। दहेज–प्रथा की विभीषिका का सम्पूर्णता के साथ परसाई ने रानी नागफनी की कहानी में वर्णन किया है। इसी के कारण नागफनी का पिता उसका विवाह निर्बल सिंह से तय कर देता है, जहॉ दहेज देने की आवश्यकता नहीं है वरन् उल्टे लडकी के पिता को ही मृत्यु–शैय्या पर पड़े राजा से पुत्री का विवाह होने पर वर– पक्ष से अतुल धनराशि प्राप्त होने की आशा है। नागफनी के पिता राखड़ सिंह को ज्ञात है कि निर्बल सिंह कि कई रानियां पहले से हैं और उनके पुत्रों में राजगद्दी के लिए पारस्परिक संघर्ष भी चल रहा है तथा विलास–जर्जर काया के स्वामी आसन्न मृत्यु वाले निर्बल सिंह से नागफनी को सन्तति की प्राप्ति भी नहीं हो सकती, लेकिन वह अपने लोभ का संवरण नहीं कर पाता और अपनी पुत्री का भविष्य अंधकारमय करने के लिए कटिबद्व हो जाता है। निर्बल सिंह में मंत्री का प्रस्ताव उसके लिए इतना आकर्षक है कि वह अपनी सहमति प्रकट कर देता है। मंत्री कहता है अपनी पुत्री का विवाह निर्बल सिंह से करके राखड़ सिंह अतुलित सम्पत्ति का स्वामी बन जायेगा––''विलास मंत्री ने पुनः नमन करके कहा, महाराज–––––––आप ऐसा समझें कि आप पुत्र का विवाह कर रहे हैं। पुत्री का नहीं। हमारे महाराज बिस्तर से नहीं उठ सकते। इसलिए बारात लेकर आपको आना पड़ेगा। इससे आप एक नई परम्परा को जन्म देंगे और भविष्य में विवाह–लोलुप वृद्ध आपको आशीर्वाद देंगे । आप नहीं जानते, वृद्धों को बारात लेकर जाने में कितनी तकलीफ होती है। यदि यह परम्परा आरम्भ हो गयी तो अरथी उठते –उठते भी बूढ़ों का विवाह हो सकेगा। आप जब बारात लेकर आयेंगे तो दहेज वगैरह राजा साहब की ओर से आपको मिलेगा और राजा साहब मुंह देंगे । '' नागफनी को जब यह ज्ञात होता है कि धन का लोभी पिता उसका विवाह जीवन की अतिंम सॉसे गिन रहे निर्बल सिंह से करना चाहता है तो वह अपने पिता का विरोध करती है, इस पर राखड़ सिंह उसे डांटते हुए कहता है––''सुन लड़की जीवन अपना नहीं होता, विवाह के पहले बाप के अधिकार में होता है और विवाह के बाद पति के। वे उसे नष्ट कर सकते हैं। और मैं तो तेरे भले की सोच रहा हूँ।'' इन पंक्तियों को पढ़कर नारी–स्वतंत्रता के लिए होने वाले नित नये आन्दोलनों की व्यर्थता सिद्व हो जाती है। नारी अपनों के ही बीच शोषण का शिकार होती है। जिस पति के साथ उसे जीवन व्यतीत करना है, उसका चुनाव उसे स्वयं करने का कोई अधिकार नहीं है। माता–पिता जहां चाहें, जैसे चाहें, उसके भाग्य का निर्धारण करते हैं। विवाह के पश्चात् वह पति के संकेतों पर नृत्य करने वाली पुतली के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाती। अर्धागिनी होने के अधिकारों से तो वह पूरी तरह से वंचित ही रहती है। तभी तो तुलसी ने उसकी दुःखद स्थिति से द्रवित हो कर लिखा

''कत विधि सृजी नारि जग माहीं
पराधीन सपनेहूँ सुख नाहीं।''

स्त्री–जीवन के मर्म को उदृघाटित करने वाली गुप्त की ये पक्तियॉ तो जन–जन की जिह्म पर है–

'' अबला–जीवन हाय!तुम्हारी यही कहानी,
ऑचल में है दूध, और और ऑखों में पानी।''

युगों से पुरूष ने त्याग और तपस्या की देवी के रूप में नारी को प्रतिष्ठित कर उसकी मनुष्यता और मानव–अधिकारों से उसे वंचित रखा। अपने सुख और स्वतंत्रता को, पति –पुत्रों के लिए बलिदान देने को वह अभिशप्त बना दी गयी। बना दी गयी । दम घोंटने वाली कर्त्तव्य की फॉसी में छटपटाती नारी की व्याकुलता को पहचान कर ही पन्त का कविमन द्रवित हो कह उठा––

'' मुक्त करो नारी को।
चिर वंदिनी नारी को।
युग–युग की निमर्म कारा से–
जनानि, सखि प्यारी को।''

'रानी नागफनी की कहानी' सभी प्रकार की विसंगतियों के बहुआयामी चरित्र का उद्घाटन करती हूँ। इसमें एक ओर जहॉ सामन्ती–प्रवृत्तियों की पतनशीलता दृष्टिगोचर होती है वहीं वर्तमानजीवन की अनेक विडम्बनाओं का व्यंग्यात्मक वर्णन हुआ है। उच्च वर्ग के युवक–युवतियों में शिक्षा के प्रति अरूचि की भावना का चित्रण करते हुए परसाई ने बताया है कि उच्च वर्ग के युवक–युवतियों उच्च शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने नहीं वरन् मौज–मस्ती करने के लिए आते हैं। 'रानी नागफनी की कहानी' का कुंअर अस्तभान बी0ए0 में चार बार फेल होने पर दुःखी होकर आत्महत्या करने का विचार जब अपने मित्र मुफ्तलाल के समक्ष प्रकट करता है तो मुफ्तलाल उसे समझाते हुए उसके कुल की समृद्व(?) विद्या– परम्परा का उल्लेख करता है––'' कुमार मन को इतना छोटा मत करियें । आप उॅचे खानदान के आदमी हैं। आपके कुल में विद्या की परम्परा नहीं हैं। आपके पूज्य पिता जी बारह खड़ी से मुश्किल से आगे बड़े और आपके प्रातः स्मरणीय पितामह अंगूठा लगाते थे। ऐसे कुल में जन्म लेकर आप बी0ए0 तक पढ़े यह कम महत्त्व की बात नहीं हैं। इस बात आपका सार्वजनिक अभिनन्दन होना चाहिए । कुमार, पढ़ना–लिखना हम छोटे आदमियों का काम है। हमें नौकरी करके पेट जो भरना है। पर आपकी तो पुश्तैनी जायदाद है आप क्यों विद्या के चक्कर में पड़तें हैं।''

धनिक वर्ग की विद्या में अरूचि पर इतना धारदार व्यंग्य परसाई ही कर सकते हैं। राजकुल का दुलारा और उत्तराधिकारी कुंअर अस्तभान बी0ए0 की परीक्षा में चौथी बार भी असफल रहता है और उसका मित्र मुफ्तलाल साधारण कुलोत्पन्न होने के बावजूद परीक्षा में सफल होता है तो कुंअर अस्तभान की रगों में प्रवाहित

होने वाला वीरता (?) का रक्त उबलने लगता है और वह असफलता को सहन न कर पाने के कारण आत्महत्या का निश्चय करता है। अपने मित्र मुफ्तलाल को अपने इस निश्चय से अवगत कराते हुए वह कहता है––''चार बार हम बी0ए0 में फेल होने के बाद आत्महत्या करना वीरों का कार्य है। हम वीर–कुल के हैं। हम क्षत्रिय हैं। हम आन पर मर–मिटते हैं। हमें तो पहली बार फेल होने पर आत्महत्या कर लेनी थी। पर हमने विश्वविद्यालय को तीन मौके और दिये । अब बहुत हो चुका। हमें आत्महत्या कर ही लेनी चाहिए। जाओं, इसका प्रबन्ध करो।'' कुंवर अस्तभान और उसके जैसी कुलीनता के दम्भ में डूबे युवकों के लिए शिक्षण–संस्थाओं में प्रवेश लेना एक विलासिता मात्र है, जिसमें वे अपना समय और धन ही नष्ट नहीं करते वरन् शिक्षा के नाम पर ये जीते–जागते कलंक हैं। ऐसे लोगों का विद्या–प्रेम और शिक्षा प्राप्त करने की गति तो ऊपर वर्णित कुंवर अस्तभान के वक्तव्य से स्पष्ट ही हो जाती है। आज कल की शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का उच्च जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर प्रेरित न करके मात्र नौकरी मिलने के लिए आवश्यक डिग्रियाँ प्रदान करना है, लेकिन उच्च वर्ग जो पहले से ही सम्पन्न है और जिसे नौकरियों की आवश्यकता नहीं है, वह शिक्षा प्राप्त करने में तनिक भी रूचि नहीं दिखाता।

चिकित्सा जगत की बुराइयों पर भी 'रानी नागफनी की कहानी' में बखिया उधेड़ने वाला व्यंग्य है। 'नीम हकीम–खतरे जान' की उक्ति को चरितार्थ करने वाले डाक्टरों को पेनिसिलीन के आविष्कार से बड़ा लाभ हुआ है । बीमारी के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात न कर सकने वाले तथा रोग को पहिचानने की योग्यता न रखने वाले डाक्टर हर रोगी को पेनिसिलीन देते है, चाहे उसे उसकी आवश्यकता हो या नहीं। ऐसी स्थिति का बड़ा मनोरंजन वर्णन इस उपन्यास में हैं।

'' पेनिसिलीन की खोज से चिकित्सा–पद्वति में क्रान्ति हो गयी है। अब सिर्फ एक ही दवा रह गयी है– पेनिसिलीन । आखिर विश्व डाक्टर संघ ने हाल ही में प्रस्ताव पास किया है कि जरूरत नहीं है, क्योंकि बीमारी कोई भी हो पेनिसिलीन दिया जायेगा। पेनिसिलीन से बीमारी ही अच्छी नहीं होती, मनुष्य की सब समस्याएं भी हल होती हैं। पेनिसिलीन से रोगी मर भी जाय तो स्वर्ग में स्थान मिलता है। इस तरह पेनिसिलीन से दोनों लोक सुधरते हैं। जो बिना पेनिसिलीन के मर जाते हैं उन्हे फिर जन्म लेकर पेनिसिलीन लगवाना पड़ता हैं। एक बार पेनिसिलीन लेने से प्राणी आवागमन के बधंन से छूट जाता है।'' संसार में वणिक वृत्ति का विस्तार इतना व्यापक हो गया है कि अन्य पेशों के साथ– साथ डॉक्टरी का पेशा भी इसका अपवाद नहीं रहा। अपने लाभ के लिए डॉक्टर लोगों के जीवन से भी खेलने से नहीं हिचकिचाते।

डॉक्टरों को जनता बड़ी श्रद्वा के साथ देखती है और उन्हें ईश्वर के बाद पूज्य समझती है क्योकि वह जीवन–दाता समझा जाता है। आधुनिक युग का डॉक्टर भी अपनी गरिमा को खोकर चतुर्दिक पनप रहे भ्रष्टचार का एक अंग हो गया है। वह अपने लाभ के लिए मरीज को अच्छा नहीं होने देता। हर बीमारी के लिए डॉक्टरों द्वारा पेनिसिलीन का प्रयोग करने के कारण, जब प्रेम–रोग से ग्रस्त कुंवन अस्तभान का मित्र मुफ्तलाल डॉक्टर से पूछता है कि उसे क्या रोग है तो वह स्वीकार करता है––''कोई नहीं। पर अगर डॉक्टर यह सब दिखाने के लिए न करें तो उस पर विश्वास न किया जाय और फीस न मिलें।'' डॉक्टर रोग के निदान के स्थान पर धन ऐंठनें के लिए रोग को बढातें चले जाते हैं। अतः एक बार अगर धनी आसामी उनके चंगुल में फंस जाता है तो उसका शोषण जम कर होता है। विभिन्न प्रकार के टेस्ट कराने के बहाने रोगी को पैसा पानी की तरह बहाने को बाध्य कर दिया जाता हैं। डॉक्टरों की इसी लूट वृत्ति को लक्ष्य करके कुंअर अस्तभान का मित्र मुफ्तलाल उससे कहता है––

''कुमार डॉक्टरों से कुछ नहीं होगा, बीमारी जिनकी आमदनी का जरिया हो,वे भला बीमारी को कैसे कम होने देंगे ? डॉक्टर से एक ही लाभ है–अभी तक मरने वाला ईश्वरेच्छा समझ कर मरता था, अब डॉक्टर उसे बता देते हैं कि वह किस बीमारी से मर रहा है। इस तरह ईश्वर का उत्तदायित्व काफी कम हो गया है।''

इसी प्रकार शासन के पदों पर चिपके रहने वाले के रुप में प्रधान अमात्य का चित्रण किया गया है,जो कि किसी भी प्रकार अपने पद पर बना रहना चाहता है और इसके लिए कुछ भी करने को प्रस्तुत रहता है। उसकी पद –लोलुपता को सूचित करने वाली यह पंक्ति उल्लेखनीय है –

''पद की कुर्सियों में गीली गोंद लगी रहती है। जो बैठता है, चिपक जाता है।'' प्रधान अमात्य मरते दम तक अपने पद तक अपने पद बना रहना चाहता है –''मेरी बड़ी लालसा है कि मेरी अन्त्येष्टि राजकीय सम्मान के साथ हो। ऐसी इच्छा स्वाभाविक है। सत्ता का मोह किसे नही है। इन्द्र सत्ता के लिए कितनी अप्सराओं से कितने तपस्वियों की साधना भंग करवा चुका है,पद की कुर्सियों में गोद लगी रहती है, जो बैठता है,चिपक जाता है। जब मामूली कुर्सियों में इतनी गोद होती है,तब आपकी तो मुख्य आत्मात्य की कुर्सी है। वह तो पूरी गोंद की ही बनी होगी।''

प्रधान अमात्य अपने ही दल के विरोधी नेता भैया साहब के जीव (काले कारनामों के चिठ्ठे) को अपने वश में रखकर कुर्सी पर जमें रहने की फिराक में है। मुफ्तलाल के यह कहने पर कि भैया साहब का जीव आपके हाथ जायेगा तो आप उसे मार ही डालेगें,इस पर आमात्य कहता है कि वह तो केवल अपनी कुर्सी बचाने के लिए ऐसा आवश्यक समझता है –''राम !–राम ! कौन कहता है कि मै मारुँगा ? मैं उसे हरगिज नही मारुँगा। मैं अहिंसावाद हूँ। किसी को मारना ही हिंसा है, पर मारने की धमकी अहिंसा है। जब वह गडबड करेगा, मैं उसे धमकी दे दूगा। वह मेरे चंगुल मे रहेगा। जब सब सदस्य मेरे चंगुल मे रहे तब संसदीय जनतंत्र का मजा आता है।

चुनाव मे भाग देले वाली अनेक पार्टियों के अस्तित्व पर व्यंग्य करते हुए परसाई ने लिखा है – ' राजा की पचिसों रानियाँ, जो सवयं बूढी हो चली थी, अपने –अपने बेटे के मस्तक पर तिलक करवाने का प्रयत्न कर रही थी'

भैया साहब जैसा नेता जो स्यंम तो सभी सुख–सुविधाओं का भोग कर रहा है। लेकिन जनता की ऑखों में धूल झोकने के लिए अपने बंगले को झोपडी कहता है। भैया साहब के सचिव और पत्रकारों में हुई वार्ता भैया साहव के जीवन पर प्रकाश डालने में पर्याप्त सफल हुई है– ''.....भैया साहब का बंगला क्यों लिखते हो? तुम जानते हो इसे भैया साहब झोंपड़ी कहते है। जन–सेवक का बंगला नही,झोपड़ी होती है।''

जनता से किये गये वादों के आधार पर जो नेता चुनाव जीतकर सत्ता में आते है,वे जल्द ही अपने वादों को भूल जाते हैं। कई बार तो वे बिलकुल निरर्थक वादे भी करते है। भैया साहब ऐसे ही नेता है जिनके भाषण का अंश उनके विचारों की सुन्दर बानगी प्रस्तुत करता है–आज हमें जन–सेवा की बड़ी आवश्यकता है। अनाथालय एक ऐसी ही संस्था है। इस अनाथालय का निर्माण करके आप लोगों ने देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसी संस्थाएं बड़ी संख्या में खुलनी चाहिए। मैं तो कहता हूँ, हम ऐसे प्रयत्न करें कि हर मुहल्ले में अनाथलय खुले; घर–घर विधवा आश्रम हो।'' नेताओं के विवेकहीन वक्तव्य का इससे सुन्दर उदाहरण अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। इतना ही नहीं वह विकास–योजनाओं के स्थान पर अनाथालय–निर्माण को ज्यादा महत्वपूर्ण बताता है––''योजना– आयोग से बार–बार सिफारिश करता हूँ कि नहरों और बॉधों के निर्माण में कुछ कमी करके, पहले देश में अनाथालय खोले जाने चाहिए। पहले हमें भविष्य के बच्चों की चिन्ता करनी चाहिए।''

प्रसिद्वि प्राप्त करने के लिए नेतागण हर संभव प्रयास करते है, यहाँ तक कि वे अपने अभिनन्दन का समस्त व्यय तो वहन करते

ही है, मालाओं तक का प्रबन्ध अपने पैसों से कराते हैं और अपने ही व्यक्तियों द्वारा अपना स्वागत करा लेते हैं। भैया साहब इसके जीते–जागते प्रमाण हैं। उनके लिए कहा गया यह कथन इस दृष्टि से उल्लेखनीय है––''समारोह के प्रबन्ध में कोई कठिनाई तो नहीं है? हो तो बताइये हम कोई बाहर के नहीं हैं । कोई सामान तो नहीं चाहिए? हमारे पास झंडियॉ हमेशा तैयार रहती हैं, दरियाँ भी बहुत है। लाउडस्पीकर लगी जीप आपने बाहर देखी होगी। मान पत्र हम स्वयं छपवाकर लेते आयेंगे। ऊपरी खर्च के लिए दो–चार सौ चाहिए तो भैया साहब दे सकते है। भैया साहब अधिक–से–अधिक सुविधा देते हैं और चाहते हैं कि समारोह अच्छे से अच्छा हो।''

संसदीय जनतंत्र, आज के भ्रष्ट राजनीतिक वातावरण में एक मखौल बनकर रह गया है। दलीय राजनीति की आपसी खींचतान के कारण, बड़ा नेता छोटे नेताओं को महत्त्व ही नहीं देता इन्हें अपने कब्जे में रखने के लिए और स्वयं महत्त्वपूर्ण पदों पर बने रहने के लिए उनकी दुर्बलताओं का पता लगाकर उन्हें 'ब्लैक–मेल' करने से भी नहीं चूकता। 'रानी नागफनी की कहानी'का मुख्य अमात्य भी इसी प्रकार भैया साहब की महत्त्वाकांक्षा का गला घोटकर स्वयं प्रधान–अमात्य बना रहना चाहता है। इसके लिए वह उसके काले–कारनामों का पता लगाता है जिसे उपन्यास में भैया साहब के 'जीव' की संज्ञा दी गयी है। प्रधान अमात्य, भैया साहब के राजनीतिक जीवन को अपनी मुठ्ठी में बन्द रखना चाहता है और मुफ्तलाल के पूछने पर कि वह भैया साहब के जीव को प्राप्त कर कहीं उसकी हत्या तो नहीं कर देगा, प्रधान अमात्य उत्तर देता है–– ''राम!राम! कौन कहता हैं कि मैं मारूंगा । मैं अहिंसावादी हूॅ। किसी को मारना ही हिंसा है, पर मारने की धमकी देना अहिसा है। जब वह गड़बड़ करेगा, मैं उसे धमकी दे दूंगा। वह मेरे चंगुल में रहेगा जब सब सदस्य अपने चंगुल में रहें तब संसदीय प्रजातंत्र का मजा आता है।''

जनतंत्र की दुर्दशा का इससे बड़ा दूसरा उदाहरण क्या हो सकता है कि जनता के प्रतिनिधि के रूप में चुनकर आने वाले नेता, रचनात्मक कार्य और जनकल्याण की भावनाओं को भूलकर अपने व्यक्तिगत स्वार्थ साधने में लग जायें तथा उनकी मनमानी का विरोध न हो सके, इसके लिए वे दल के सभी सदस्यों की दुर्बलताओं का पता,गुप्तचर संस्थाओं के द्वारा लगवाकर, उन्हें अपने हर सही– गलत निर्णय पर सहमत होने के लिए बाध्य करते हैं। सरकारी संस्थाओं का जनहित में प्रयोग करने के स्थान पर विरोधियों के रहस्य जानने के काम में लगाने की आलोचना करते हुए परसाई ने लिखा है––''प्रजातंत्र में गुप्तचर विभाग राजनैतिक विरोधियों के पीछे पड़े रहने का ही काम करता हैं। अपराधों का पता लगाना तो एक बहाना है।''

स्वस्थ प्रजातंत्र की पहली आवश्यकता यह है कि सरकार की गलत नीतियों का विरोध कर, उससे असहयोग कर उसे अपने निर्णय को बदलने के लिए बाध्य किया जाय और एक स्वस्थ विपक्ष की स्थिति इसके लिए आवश्यक है। लेकिन सरकार अपनी गलत नीतियों पर भी, विपक्षियों सहित अपने लोगों को भी प्रलोभन देकर या उनकी दुर्बलता का भण्डाफोड़ कर देने का भय देकर समर्थन प्राप्त कर लेती है। सरकार में सत्ता–पद का प्रलोभन बड़े–बड़े विरोधियों को भी चुप करा देता है। नेतागण भी जनता को दिखाने के लिए ऊपर से सरकार की आलोचना करते हैं पर, चुनाव में सत्ता प्राप्त करने के लिए संभावित सरकार बनाने वालों के साथ मिलकर उन्हें विजयी बनाने का प्रयत्न करते हैं करतें हैं। भैया साहब कहते हैं कि ––––''सरकार के सब कार्यो को गलत बताता हूॅ पर जब मतदान का मौका आता है, तब मैं वोट सरकार को ही देता हूॅ।''

इस प्रकार 'रानी नागफनी की कहानी' एक फैन्टेसी उपन्यास होते हुए भी अपने समय के समाज की हर गतिविधि का रूपायन करता है। सामंती वातावरण में लिखी गयी इस उपन्यास की कथा ऊपर से काल्पनिक और कोरा बुद्विविलास लग सकती हैं। लेकिन इसकी अर्न्तवस्तु अपने समय की सभी विसंगतियों को समेटे हुए आधुनिक समाज की पूरी झलक प्रस्तुत करती है। कहानी में पात्र, घटनायें, स्थितियॉ सभी काल्पनिक होते हुए भी वर्तमान समाज में पनप रही प्रवृत्तियों के प्रतीक बनकर उभरे हैं। नाम और घटनाओं की प्रतीकात्मकता न उन्हें दोहरे अर्थ से युक्त कर दिया है। एक अर्थ अभिधात्मक है तो दूसरा व्यंजनात्मक अर्थ कहानी को विस्तृत आयाम प्रदान करता हैं। उपन्यास में वर्णित घटनायें आधुनिक जीवन में घट रही घटनाओं के अत्यधिक निकट है। वस्तुतः घटनाओं में भी प्रतीकात्मकता के प्रयोग ने उन्हें आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त प्रासंगिक बनाया है। यह उपन्यास अपने आप में परसाई का अनूठा प्रयोग है। शिल्प और कथ्य दोनों ही दृष्टियों से समकालीन व्यग्ंय उपन्यासों में 'रानी नागफनी की कहानी' का अतिविशिष्ट और महत्त्वपूर्ण स्थान है।

सन्दर्भ

1. डा0 राधेश्याम वर्माः हिन्दी व्यंग्य उपन्यास
2. डेविड वोरचेस्टरः दि आर्ट आफ सटायर
3. डा0 शिव प्रसाद सिहः आधुनिक परिवेश और नवलेखन
4. डा0 सत्यपाल चुघः प्रेम चन्द्रोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि
5. डा0 सुभद्राः हिन्दी उपन्यास–परम्परा और प्रयोग